



SMT. PANKAJAKSHI M.S.

Smt. Pankajakshi Moozhikkal Sivaraman, popularly known as Pankajakshi Amma, is the only surviving exponent of the unique and near extinct art form of Kerala, Nokku Vidya Pava Kali.

2. Born on 14th March, 1936 in the remote village of Urulikunnam of Kottayam District, Kerala, Smt. Pankajakshi Amma started learning this genre of puppetry from her mother Late Paappiyamma at the tender age of ten. Despite her deep desire to continue her studies, she had to give up schooling due to financial constraints. But fate had something else in store for her as she decided to dedicate herself to learning and propagation of this traditional art form. In addition, she acquired skills in the field of preparation of indigenous medicines and treatment.

3. After her marriage with Shivarama Panicker, she shifted to Monippally, Kottayam. She, along with her husband, who also played the percussion instrument `kinjara's an accompanist during the performances, played a stellar role in resurrecting and preserving this wonderful art form. The duo not only designed and created the puppets but performed Nokku Vidya Pava Kali in various parts of the country and abroad.

4. Smt. Pankajakshi Amma exhibits Nokku Vidya Pava Kali, which requires both dexterity and immense concentration coupled with meticulous control of the puppets placed on the upper lips without using the hands, with consummate ease. She knew that patience and practice holds the key for mastering this art form and she had both in abundance.

5. Smt. Pankajakshi Amma continuously performed this art form for nearly six decades and has been instrumental in preserving this rare variety of puppetry. She has been grooming her 20 year old grandchild, Ranjini, who is carrying forward the legacy and is the only surviving performer of Nokku Vidya Pava Kali now.

6. Smt. Pankajakshi Amma has been conferred the Kerala State Folklore Academy Award in 2012 and is a recipient of their Fellowship in 2014. She has performed in selected cities of India and also performed in Paris as part of the Kerala Tourism Festival, 2008. Even though her failing health has prevented her from performing, she is actively encouraging her granddaughter by honing her skills and thereby ensures that this art form does not become extinct.





श्रीमती पंकजाक्षी एम.एस.

श्रीमती पंकजाक्षी मुझिक्कल शिवारमन जो पंकजाक्षी अम्मा के नाम से लोकप्रिय हैं, केरल के विशिष्ट और विलुप्त हो रही नोक्कू विद्या पावा काली कला की एकमात्र जीवित कलाकार हैं।

2. 14 मार्च, 1936 को केरल के कोट्टायम जिले के उरूलीकुन्नम गांव में जन्मी श्रीमती पंकजाक्षी अम्मा ने दस वर्ष की अल्पायु में अपनी माता स्वर्गीय पाप्पीअम्मा से कठपुतली की यह कला सीखनी आरम्भ कर दी थी। अध्ययन जारी रखने की उनकी आकांक्षा के बावजूद, खराब माली हालत के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। किंतु, उनकी किस्मत में कुछ और ही लिखा था। अपना जीवन उन्होंने इस पारम्परिक कला को सीखने और इसके प्रसार के लिए समर्पित करने का निर्णय किया। इसके अलावा, उन्होंने देसी दवाएं तैयार करने तथा देसी उपचार के क्षेत्र में भी कौशल हासिल किया।

3. श्री शिवराम पनिकर से विवाह के पश्चात, वो मोनिपल्ली, कोट्टायम आ गईं। उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर इस बेहतरीन कला के पुनरुद्धार और संरक्षण में शानदार भूमिका अदा की। उनके पति कला प्रस्तुतियों में उनके साथ 'किंजर' तालवादक के रूप में रहते थे। दोनों ने न केवल कठपुतलियां डिजाइन कीं और बनाई बल्कि, देश और विदेश के कई भागों में नोक्कू विद्या पावा काली कला की प्रस्तुति भी दी।

4. श्रीमती पंकजाक्षी अम्मा नोक्कू विद्या पावा काली कला का प्रदर्शन करती हैं जिसके लिए निपुणता और एकाग्रचितता दोनों के साथ, ऊपरी होंठ पर रखी हुई कठपुतलियों का सहज और सर्तक नियंत्रण आवश्यक होता है, जिसे हाथ से नहीं पकड़ा जाता है। उन्हें पता था कि इस कला में महारत हासिल करने के लिए धैर्य और अभ्यास जरूरी है और उनमें ये दोनों गुण थे।

5. श्रीमती पंकजाक्षी अम्मा ने लगातार छः दशकों तक इस कला की प्रस्तुतियां दीं और इस दुर्लभ कठपुतली कला के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वह अपनी 20 वर्षीय पोती रजनी को यह कला सिखा रही हैं जो इस विरासत को आगे ले जा रही है और अब नोक्कू विद्या पावा काली कला की प्रस्तुति दे रही एकमात्र जीवित कलाकार है।

6. श्रीमती पंकजाक्षी अम्मा को 2012 में केरल राज्य फोकलोर एकेडमी अवार्ड दिया गया है और उन्हें 2014 में अकादमी की फेलोशिप भी प्राप्त हुआ है। उन्होंने भारत के कुछ शहरों में प्रस्तुतियां दी हैं और 2008 में पेरिस में केरल पर्यटन उत्सव में भी प्रस्तुति दी। यद्यपि, अपने खराब स्वास्थ्य के कारण अब वह प्रस्तुतियां नहीं देती हैं, किंतु, अपनी पोती के कला कौशल में सुधार करके उसे प्रोत्साहित कर रही हैं और इस प्रकार यह सुनिश्चित कर रही है कि यह कला विलुप्त न हो।